RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-05
May-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

पर्यावरण संरक्षण का सहितागत व्यवस्था

सुभाष कुमार

शोधार्थी विश्वविद्यालय प्राचीन भारतीय इतिहास पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग ल० ना० मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा–846004

महानगरों और कस्बों के आसमान में इस तरह प्रदूषण भरा रहता है कि उषा की पवित्र और कमनीय किरणों का दर्शन हो पाना कठिन हो जाता है। मानव के द्वारा किये गये क्रिया–कलापों से आसमान अनेक प्रकार की गर्द–गुबार से भारता जा रहा है। उषा विषयक वेद के ऋषि की कल्पना है कि उषा कालीन क्षितिज मनमोहक है। उषा काल को देखने आज भी अनेकों स्थलों पर पर्यटकों की भीड़ उभड़ती है। कन्याकुमारी का समुद्र तट इसका अनुपम उदाहरण है।

यदि उषा की किरणें निर्वाध रूप से धरती पर उतरें तो पर्यावरण संरक्षित रहेगा तथा स्वास्थ्य का विकास होगा। अथर्ववेद के पृथ्वी सूक्त में कहा गया है कि **"माताभूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः"**[1] अर्थात् पृथ्वी हमारी माता है, हम इसके पुत्र हैं। जो पुत्र अपनी माता को प्रदूषित करता है, उससे निकृष्ट और कौन हो सकता है? जो माता की सुरक्षा, संरक्षा, सुचिता तथा स्वाभिमान के प्रति सर्वथा समर्पित हो उससे उत्कृष्ट और कौन हो सकता है? हमें पृथ्वी माता के पर्यावरण को इसलिए स्वच्छ रखना चाहिए क्योंकि भोजन और स्वास्थ्य देने वाली सभी वनस्पतियाँ इसी भूमि पर ही उत्पन्न होती हैं। पृथ्वी सभी वनस्पतियों की माता और मेघ पिता है। क्योंकि वर्षा के रूप में पानी देकर यह पृथ्वी में गर्भाधान करता है।[2]

जब तक हमारी मानसिक पर्यावरण चेतना सुसंस्कृत तथा परिस्कृत नहीं होगी तब तक हमारे लिए मानसिक शान्ति और आध्यात्मिक उपलब्धियाँ मृगमरीचिका ही रहेंगी। पर्यावरण प्रदूषण को कैसे रोका जा सकता है? इस संहिता साहित्य ने समाज का ध्यान आकर्षित किया था। वे भूमि को ईश्वर का ही रूप मानते थे। पर्यावरण की रक्षा, पूजा का एक अविभाज्य अंग था।

भूमि जिसकी पाद स्थानीय और अन्तरिक्ष उदर के समान है, द्युलोक जिसका मस्तक है, उन सबसे बड़े ब्रह्म को नमस्कार है।[3] यहाँ पर ब्रह्मपरमेश्वर को नमन करते हुए प्रकृति के अनुसार चलने का निर्देश दिया है। वेदों में पर्यावरण का विभाजन वायु, जल, ध्वनि, खाद, मिट्टी, वनस्पति एवं पशु–पक्षी संरक्षण आदि के रूप में किया गया है। वैदिक ऋषि जल की शुद्धता पर विशेष बल देते हैं। क्योंकि शुद्ध जल में रोग विनाशक तत्त्व होते हैं। यह दीर्घजीवन का सिद्धसूत्र है। ऋषियों का कथन है कि वे रोग विनाश जल को ग्रहण करते हैं। स्वच्छ जल पीने से आयु बढ़ती है। अन्न, घृत, दुग्ध आदि सामग्री तथा अग्नि के सहित घरों में आकर सम्यक रूप से स्वच्छता का निवाश स्थान निर्मित करता है।[4]

यदि शुद्ध जल का उपयोग किया जाय तो वह मंगल प्रदाता तथा घृत के समान पुष्टि वर्धक होता है। जल माधुर्य पूर्ण जल धाराओं का स्रोत है, जल में आयेर्वेदीय गुण है। जल भोजन पचाने में अत्यन्त उपयोगी है। जल से प्राण शक्ति विवर्धित होती है। वह कानित, बल और पौरूष का आधार है वह मानव को अमरता की ओर ले जाने वाला मूल तत्त्व है।[5]

वेद का कथन है कि, जल में सब प्रकार की औषधिया हैं और उसमें अग्नि भी है जो विश्व का कल्याण करती है।[6]

जो जल सब प्रकार की औषधि से युक्त है, अर्थात् शुद्धता और पवित्रता और आरोग्य का मूल मन्त्र है उसे प्रदूषित करना मानवता के विरूद्ध अपराध है। जल देवता स्वरूप है तभी वेद का ऋषि उद्घोष कर रहा है कि हमारे लिए समस्त मरूस्थल का जल सुखप्रदायक हो। दलदल तथा जलीय क्षेत्र का जल सुखदाई हो। पृथ्वी खोदकर निकाले हुए कुएँ आदि का जल सुखदाई हो। घड़े में रखा हुआ जल सुखदाई हो और वर्षा से प्राप्त जल सुखदाई हो।[7–8]

वायु की शुद्धि जीवन के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। इस तथ्य को यजुर्वेद में स्पष्ट किया गया है।[9]

"उत्तम गुण वाला प्रकाश रहित तथा सबको प्राप्त होने वाला जो वायु शरीर में विचरण करता है, उसको तुम जानो।" वायु को शुद्ध और अशुद्ध अर्थात् ऑक्सीजन और कार्बन डाईऑक्साइड इन दो रूपों में विभाजित करते हुए वेद में कहा गया है–

प्रत्यक्ष और भूत दोनों प्रकार की हवायें सागर पर्यन्त और समुद्र से दूर प्रदेश पर्यन्त बहती रहती है। हे साधक! एक तो मेरे लिए शक्तिदायक है और एक जो दूषित है उसे दूर फेंक देती है।[10] हजारों वर्ष पूर्व पूर्वज इस तत्व से अवगत थे कि हवा कई प्रकार की गैसों का मिश्रण है। जिनके अलग–अलग गुण और अवगुण हैं। इनमें ही प्राणवायु भी है जो जीवन के लिए अत्यावश्यक है।[11]

इस वायु के गृह में जो यह अमर तत्व की धरोहर स्थापित है वह हमारे जीवन के लिए आवश्यक है। शुद्ध वायु कई रोगों के लिए औषधि का कार्य करती है।[12]

शुद्ध ताजी वायु अमूल्य औषधि है जो हमारे हृदय के लिए औषधि के समान उपयोगी है एवं आनन्ददायक हे। वह उसे प्राप्त कराता है और हमारी आयु को बढ़ता है।[13] वैदिक वांग्मय पर्यावरण–चेतना के प्रति जागरूक है। वेद का स्पष्ट कथन है कि हम सौ वर्षों तक उन्नति करते रहें।[14]

पश्येम शरदः शतम्।।
जीवेम शरदः शतम्।।
बुध्येग शरदः शतम्।।
सेहेम शरदः शतम्।।

यदि हमारी पर्यावरण चेतना निरन्तर इसी प्रकार लुप्त होती रही तो हम प्रकृति प्रदत्त मानव की सौ साल तक की आयु तक कैसे जी पायेंगे? हम अपनी सम्पूर्ण आयु को बिना

RRIJM 2015, All Rights Reserved

दुःख भोगे जियें इसके लिए वेद के कतिपय अंशों के आधार पर यहाँ यह आंकलन करने का उपक्रम किया जायेगा कि वेदों में पर्यावरण–चेतना कितनी चैतन्य और विकसित है। जिसके आधार पर हम भावी जीवन को सुखमय जीने में सफल हो सकें।

शतपथ ब्राह्मण में कहा गया है कि, औषधिया प्रदूषकों का अवशोषण करती है।[15] **''ओषंधयेति त्तः औषधयः संभवम्''** तैत्तिरीय ब्राह्मण में कहा गया है कि औषधिया वप्रवृद्धा होती है।[16] जिसका दो प्रकार से होता है। 1. वर्षा को बढ़ाने वाली तथा 2. वर्षा से बढ़ने वाली। शतपथ ब्राह्मण में कहा गया है– ''यज्ञो हि सर्वाणि भूतानि भुनक्ति''[17] यज्ञो वैभवनस्य नाभिः[18] आयं वै यज्ञो योऽयं पवते[19] यज्ञो हि सर्वाणि भूतानि विष्टानि[20] गोपथ ब्राह्मण में कहा गया है कि– भैषज्य संज्ञा वा एते ऋतु संधिषु प्रयुज्यन्ते, ऋतु संधिषु वै व्याधिर्यायते[21] शतपपथ ब्राह्मण में कहा गया है कि शब्द ही वज्र है, उसका प्रयोग संतलित हो कर ही करना चाहिए। उसके दुरूप्योग से मानव को कष्ट भोगना होता है।[22] ऐतरेय ब्राह्मण में भी शब्द को शस्त्र के रूप में बताया गया है।[23]

ऐतरेय आरण्यक में कहा गया है कि वायु, अग्नि और पृथ्वी विराट् ब्रह्म की विभूतिया है। ये जब तक सुरक्षित बनी रहती है, नष्ट नहीं होती है, तब तक प्रजाओं के लिए भोग भूमिया हैं, सुख की साधन है।[24]

इस प्रकार जीव, प्राण, अन्तरिक्ष और पृथिवी का परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध है। ऐतरेय में भी इस तथ्य का उल्लेख करता है।[25]

तैत्तिरीय आरण्यक में सभी सुखों का और पर्यावरण की शुद्धि का यज्ञ श्रेय को दिया गया है। अतः उसके महत्व पर तैत्तिरीयारण्यक में विशद चर्चा करता है।[26]

इस प्रकार ऊपर दिये गये वैज्ञानिक निष्कर्षों से स्पष्ट है कि पेड़–पौधे न केवल पर्यावरण–सन्तुलन के श्रेष्ठ विकल्प है, अपितु विषैली गैसों के शोषण तथा ऑक्सीजन प्रदान करने के कारण प्राणियों के जीवन का आधार है। अतः वृक्षों की सुरक्षा में ही मानव सुरक्षित है, यह सिद्ध हो चुका है। छान्दोग्योपनिषद् में इस बात की पुष्टि करता है।[27]

आधुनिक युग में यदि हम पर्यावरण को शुद्ध रखना चाहते हैं तो निश्चित रूप से हमें अपने प्राचीन ऋषियों, महर्षियों के बताये हुए कल्याणकारी मार्ग का अन्वेषण करना ही होगा और वह सुगम मार्ग है; अध्यात्म। हमें अपने जीवन में अध्यात्मिकता को महत्व देना होगा। अध्यात्म का तात्पर्य केवल, तिलक धारण करना, सुन्दर वस्त्र पहनना और दिव्य वचनों को बोलना ही नहीं है, प्रत्युत अपने स्वयं के जीवन को सर्वजन कल्याणकारी बनाना भी है। मानव अपने जीवन में सर्वजन हिताय जो कार्य करता है वह उसके द्वारा किया गया कर्म ही उसका यज्ञ हो जाता है। किन्तु मनुष्य स्वयं किसी विधि विशेष को समझे बिना कैसे उस यज्ञ को समझ सकता है? अतः वेदों में महर्षियों ने अपने निज अनुभव के आधार पर अपने आप को यज्ञमय बनाने के लिए कुछ नियम बनाये हैं। मानव का धर्म है कि वह ऋषियों के बनाये हुए मार्ग पर चलकर अपने जीवन को धन्य करें। मानव को सच्चे अर्थों में मानव बनाने के लिए दैनिक पंच यज्ञों का विधान किया गया है, जो निम्नानुसार हैः–

01. ब्रह्मयज्ञ–प्रातः काल तथा सायंकाल नित्य ब्रह्म का चिन्तन करना ही ब्रह्मयज्ञ हैं वेदों को भी ब्रह्म कहा गया है, अतः नित्य वेदों का अध्ययन, अवलोकन तथा उनका चिन्तन करना ही ब्रह्म यज्ञ है।
02. देवयज्ञ – देव यज्ञ दैनिक होता है। प्रत्येक गृहस्थ का धर्म है कि वह सुख की कामना करने वाला अपने परिवार के साथ भोजन के पूर्व कुछ हवनीय पदार्थों की हवि दे। जिससे उसके आन्तरिक और ब्राह्म सभी प्रकार के कल्मष दूर हो सकें और वह सुखी हो सके।
03. भूतयज्ञ – मानव का कर्त्तव्य है कि वह अपने लिए पकाये हुए अनन्न में से कुछ भाग अपने से भिन्न के लिए निकाल कर रख दे, यदि वह प्रेम से अपने सिवाय अन्यों का भी ध्यान करता है तो वह निश्चित रूप से भूतयज्ञ करता है। महर्षि यास्क ने इस वेद वाक्य को अपने ग्रन्थ में उल्लेख करते हुए कहा गया है–

''केवलाघो भवति केवलादी''

अर्थात् वह केवल पाप का भागी होता है जो बिना किसी को खिलाये हुए स्वयं खा लेता है।

04. अतिथि यज्ञ–अतिथि सत्कार भी यज्ञ हैं जो गृहस्थ अतिथि यज्ञ नहीं करता वह पाप का भागी होता है। उसके सभी पुण्य नष्ट हो जाते हैं तथा वह नर्क तुल्य जीवन–यापन करता है।

वर्त्तमान समय में पर्यावरण चेतना का केन्द्र बिन्दु स्थूल पदार्थ है। जबकि स्थायी तथा धर्मनिष्ठ पर्यावरण चेतना के अभाव के कारण प्रदूषण तथा अनुसंधान की चरम स्थिति में वायु शोधन, जलशोधन, तथा भू–संरक्षण के तात्कालिक प्रयास किये जाने चाहिए, जो बढ़े हुए संक्रामक रोग की भाँति असाध्य तथा निष्फल प्रायः होते जा रहे हैं।

इस भयावह स्थिति से निपटने के लिए मानव जाति के लिए आज इस रहस्य को समझना नितान्त आवश्यक हो गया है, क्योंकि यह यजन निरन्तर चलने वाली जीवनी शक्ति का अंग है। इसमें प्रमाद का परिणाम हमारे समझ प्रत्यक्ष है। भारतीय दर्शन में प्राकृतिक अनुराग और प्रकृति संरक्षण की चिरन्तर धारा का ही पर्याय भारतीय संस्कृति है। हम सभी इस प्रकृति के अविभाज्य अंग ही तो है, क्योंकि, बिना प्रकृति के न तो मानव का अस्तित्व है और न ही मानवेतर किसी अन्य प्राणी का। प्रकृति में विद्यमान जल, वायु, सूर्यादि ग्रह, नक्षत्र, वनस्पतियाँ, एवं जीव जगत् ये सभी मानव जीवन के अनिवार्य एवं आवश्यक घटक है। इनमें से किसी एक की भी हानि होती है तो जैसे एक धागे के टूट जाने के पश्चात् सभी बँधे हुए पुष्प बिखर जाते हैं ठीक उसी प्रकार संसार में फैला विविध रूप रंगों का यह जीवन विखर जायेगा। इसी संरक्षण की भावना से ओत–प्रोत होकर मनीषियों ने समग्र प्राकृतिक शक्तियों को देवीय स्वरूप प्रदान करने का सफल प्रयास किया था।

इस तरह संहितागत व्यवस्था पर्यावरण संरक्षण का मूलाधार है। सभी संहिताओं पर्यावरण सम्बन्धी मंत्र पाये जाते हैं। उन मंत्रों के माध्यम से हम दैनिक जीवन में पर्यावरण का संरक्षण कैसे करें, उसका दिशा–निर्देश हमें उपरोक्त वर्णित संहिता ग्रन्थ में मिलता है। आज वैज्ञानिकों ने यज्ञ–अनुष्ठान को वैज्ञानिक आधार पर प्रमाणित कर दिया है कि यज्ञ के हवि से उठा धुँआ पर्यावरण को स्वच्छ बनाता है और हानिकारक तत्त्वों एवं गैसों को वह नष्ट करता है। आज आवश्यकता है, पर्यावरण संरक्षण के लिए उन संहिता ग्रन्थों के अध्ययन की

आवश्यकता है। ये संहिता ग्रन्थ हमें पर्यावरण संरक्षण का सूत्र देती है।

सन्दर्भ ग्रन्थों की सूचीः–

01. अथर्ववेद, 12/1/12.
02. अथर्ववेद, 12/1/42.
03. अथर्ववेद, 10/7/32.
04. अथर्ववेद, 3/12/9.
05. अथर्ववेद, 3/13/15.
06. ऋग्वेद 10/9/6.
07. अथर्ववेद, 1/6/4.
08. अथर्ववेद, 3/30/3.
09. यजुर्वेद 27/13.
10. ऋग्वेद 10/137/2.
11. ऋग्वेद 10/186/3.
12. ऋग्वेद 10/137/4.
13. ऋग्वेद 10/186/1.
14. अथर्ववेद, 19/67/1.
15. शतपथ ब्राह्मण, 2/2/4/5.
16. तैत्तिरीय ब्राह्मण, 3/2/2/5.
17. शतपथ ब्राह्मण, 9/4/1/11.
18. तैत्तिरीय ब्राह्मण, 3/9/5/5.
19. ऐतरेय ब्राह्मण, 5/33.
20. शतपथ ब्राह्मण, 8/7/2/21.
21. गोपथ ब्राह्मण, 1/19.
22. शतपथ ब्राह्मण, 7/2/4/28.
23. ऐतरेय ब्राह्मण, 3/44.
24. ऐतरेय आरण्यक, 2/1/217.
25. ऐतरेय आरण्यक, 2/1/7.
26. तैत्तिरीय ब्राह्मण, 10/79.
27. छान्दोग्योपनिषद, 4/16/1.

RRIJM 2015, All Rights Reserved